Shri Jain P G College, Bikaner

श्री जैन (पी.जी.) कॉलेज, बीकानेर

A-309

B.A. (Part-III) Examination, 2018

HINDI LITERATURE

First Paper

(आधुनिक काव्य)

Time allowed : Three hours

Maximum Marks : 100

इकाई – I

1. (अ) निम्नांकित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (उत्तर सीमा 200 शब्द) [7]

यहाँ जो है केवल
नियम है
जिसका वृहत् विराट् चक्र है
कर्म ही गति है
इस अग्नि चक्र की।
तब किससे कर रहे हो प्रश्न
राघव ?
उस अजन्मे अमर्त्य महाकाल को
न जन्म से
न मृत्यु से
न संबंधों से
योजित या विभाजित किया जा सकता
उस महानियम के निकट
हम केवल कर्म के क्षण हैं।

अथवा

ओ मेरे आधे व्यक्तित्व के
अधूरे मन !
इन गूँगे संशयों
अधूरी शंकाओं
बहरे प्रश्नों का क्या होगा ?
मैंने अपने आधे को
सर्वस्व समझकर सौंप दिया
ज्वारों को।
ओ अर्द्ध व्यक्ति के अर्द्ध सत्य !
युद्ध नियति है
प्रश्न नहीं।
मैंने संकल्प जलोवत
सिरा दिया है प्रश्नों को
इन अपरिमित ज्वारों में।

(ब) "संशय की एक रात" क्या काव्य नाटक है अथवा खंड काव्य ? यह स्पष्ट करते हुए इसकी प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
(उत्तर सीमा : 350 शब्द) [10]

अथवा

'संशय की एक रात' खण्ड काव्य में निहित आधुनिक सन्दर्भों पर प्रकाश डालते हुए इसके मूल उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

(स) 'संशय की एक रात' खण्ड काव्य में आधुनिक युग की युद्ध और शान्ति की समस्या को किस तरह उभारा गया है ?
(उत्तर सीमा : 100 शब्द) [3]

अथवा

जटायु की छाया ने श्रीराम से क्या कहा ? स्पष्ट कीजिए।

2. (अ) निम्नांकित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :
(उत्तर सीमा 200 शब्द) [7]

पहुँचते वह थे शर-वेग से।
विपद-संकुल आकुल-ओक में।
तुरत थे करते वह नाश भी।
परम-वीर-समान विपत्ति का।।
लख अलौकिक-स्फूर्ति सु-दक्षता।
चकित-स्तंभित गोप-समूह था।
अधिकतः बँधता यह ध्यान था।
ब्रज-विभूषण हैं शतशः बने।।

अथवा

संसृति के विक्षत पग रे।
वह चलती है डगमग रे।
अनुलेप सदृश तू लग रे।
मृदु दल विखेर इस मग रे।
कर चुके मधुर मधुपान भृंग।
भुनती वसुधा तपते नग,
दुखिया है सारा अग-जग,
कंटक मिलते हैं प्रति पग,
जलती सिकता का यह मग,
बह जा बन करुणा की तरंग,
जलता है यह जीवन-पतंग।

(ब) गीतिकाव्य के तत्वों की दृष्टि से पंत के काव्य की आलोचना कीजिए। (उत्तर सीमा 350 शब्द) [10]

अथवा

निराला के काव्य की भाषा, अलंकार योजना और प्रतीकात्मकता को पठित कविताओं के आधार पर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(स) प्रसाद के 'आँसू' काव्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (उत्तर सीमा 100 शब्द) [3]

अथवा

'महादेवी वर्मा के काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ उनके पारिवारिक जीवन से भी प्रभावित हैं।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

इकाई – III

3. निम्नांकित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (उत्तर सीमा 200 शब्द) [7]

(अ) वाह री मानवता,
तू भी करती है कमाल,
आया करें पीर, पैगम्बर, आचार्य,
महंत महात्मा हजार,
लाया करें अहदनामें इलहाम,
छाँटा करें अक्ल, बघारा करें ज्ञान,
दिया करें प्रवचन, वाज़,
तू एक कान से सुनती,
दूसरे से देती निकाल,
चलती है अपनी समय-सिद्ध चाल।
जहाँ हैं तेरी बस्तियाँ, तेरे बाज़ार,
तेरे लेन देन, तेरे कमाई-खर्च के स्थान,
वहाँ कहाँ हैं
राम, कृष्ण, बुद्ध, मुहम्मद, ईसा के
कोई निशान।

अथवा

टूट गया प्राचीर तुम्हारे हुंकारों से,
दासों की बेड़ियाँ और जंजीर गल गयीं
ऐसा भी क्या चमत्कार ! देखते-देखते
आजादी की लता फूल कर तुरत फल गयी।
क्या कह जोड़े हाथ ? चतुर्दिक भूमण्डल पर,
तुमने आर्त्त जनों को जीवन-दान दिया है,
रोटी दी, गृह-वसन दिये, पर, सबसे बढ़कर,
मस्तक में गौरव, मन में अभिमान दिया है।

(ब) अज्ञेय की 'असाध्य वीणा' का मूल उद्देश्य एवं निहित संदेश पर प्रकाश डालिए। (उत्तर सीमा 350 शब्द) [10]

अथवा

'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता के आधार पर भवानी प्रसाद मिश्र की कविता की विशेषताएँ बताइये।

(स) "नागार्जुन की प्रगतिशील चेतना अनेक प्रकार की है।" स्पष्ट कीजिए। (उत्तर सीमा 100 शब्द) [3]

अथवा

"मुक्तिबोध की प्रतीक योजना नवीन और मौलिक है।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

इकाई – IV

4. निम्नांकित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (उत्तर सीमा 200 शब्द) [7]

(अ) कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।
यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए।
न हो कमीज़ तो पाँवों से पेट ढक लेंगे,
ये लोग कितने मुनासिब हैं, उस सफ़र के लिए।

अथवा

सूखी है तो क्या,
नदी है तो
बहेगी ही
अपने सूखने में भी
जल को कहेगी ही
सूने घाट पर लहराती यादों की थपकियाँ
रहेंगी ही
जल कैसे जायेगा
उसके बिना खुद तक
इसलिए नदी
होने को अपने
सहेगी ही।

(ब) 'मोची राम' कविता के मर्म को उद्‌घाटित करते हुए कविता में व्यक्त भाव को स्पष्ट कीजिए। (उत्तर सीमा 350 शब्द) [10]

अथवा

दुष्यंत कुमार ने गजल विधा को नया जीवन दिया। इस कथन के परिप्रेक्ष्य में गजलों की विशेषताएँ बताइये।

(स) हरीश भादानी के काव्य-शिल्प पर टिप्पणी लिखिये।
(उत्तर सीमा 100 शब्द) [3]

अथवा

नंद किशोर आचार्य की 'जब तक' शीर्षक कविता का मूलभाव स्पष्ट कीजिए।

इकाई – V

5. (अ) प्रयोगवादी काव्य की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
(उत्तर सीमा 300 शब्द) [7]

अथवा

दीर्घ कविता से आप क्या समझते हैं ? इसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

(ब) काव्य में प्रतीक योजना का महत्त्व बताते हुए प्रतीकों का वर्गीकरण कीजिए। (उत्तर सीमा 300 शब्द) [7]

अथवा

साधारणीकरण से क्या तात्पर्य है ? साधारणीकरण का स्वरूप एवं साधारणीकरण की प्रक्रिया को संक्षेप में बताइये।

(स) निम्नांकित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
(उत्तर सीमा 75 शब्द) [2×3 = 6]

(i) संचारी भाव

(ii) नकेनवाद

(iii) वीर रस

(iv) बिम्ब

No. of Pages – 4

श्री जैन (पी.जी.) कॉलेज, बीकानेर

A-313

B.A. (Part-III) Examination, 2018

HINDI LITERATURE

Second Paper

(निबन्ध एवं भाषा)

Time allowed : Three hours

Maximum Marks : 100

इकाई – I

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (उत्तर सीमा 200 शब्द) [7]

मौन रूपी व्याख्यान की महत्ता इतनी बलवती, इतनी अर्थवती और इतनी प्रभावशाली होती है कि उसके सामने मातृभाषा, क्या साहित्य भाषा और क्या अन्य देश की भाषा सब की सब तुच्छ प्रतीत होती है। अन्य कोई भाषा दिव्य नहीं, केवल आचरण की मौन भाषा ही ईश्वरीय है। विचार करके देखो, मौन व्याख्यान किस तरह आपके हृदय की नाड़ी-नाड़ी में सुन्दरता को पिरो देता है। वह व्याख्यान ही क्या जिसने हृदय की धुन को-मन के लक्ष्य को-ही न बदल दिया।

अथवा

फल की भावना से उत्पन्न आनन्द भी साधक कर्मों की ओर हर्ष और तत्परता के साथ प्रवृत्त करता है, पर फल का लोभ जहाँ प्रधान रहता है। वहाँ कर्म-विषयक आनन्द उसी फल की भावना की तीव्रता और मन्दता पर अवलम्बित रहता है। उद्योग के प्रभाव के बीच जब-जब फल की भावना मन्द पड़ती है। उसकी आशा कुछ धुँधली पड़ जाती है, तब-तब आनन्द की उमंग गिर जाती है और उसी के साथ उद्योग में शिथिलता आ जाती है। पर कर्म भावना प्रधान उत्साह बराबर एक रस रहता है। फलासक्त उत्साही असफल होने पर खिन्न और दुखी होता है, पर कर्मासक्त उत्साही केवल कर्मानुष्ठान के पूर्व की अवस्था में हो जाता है। अतः हम यह कह सकते हैं कि कर्म भावना प्रधान

उत्साह ही सच्चा उत्साह है। फल-भावना-प्रधान उत्साह तो लोभ का ही एक प्रछन्न रूप है।

2. 'साहित्य का मूल्य' निबन्ध का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
(उत्तर सीमा 400 शब्द) [12]

अथवा

आचार्य राम चन्द्र शुक्ल की निबन्ध शैली की विशेषताओं को उद्घाटित कीजिए।

3. आचरण की सभ्यता से क्या तात्पर्य है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। (उत्तर सीमा 100 शब्द) [3]

अथवा

साहित्य के सन्दर्भ में मूल्य का क्या तात्पर्य है ?

इकाई – II

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (उत्तर सीमा 200 शब्द) [7]

जातियां इस देश में अनेक आई हैं। लड़ती-झगड़ती भी रही हैं। फिर प्रेम पूर्वक बस भी गई हैं, सभ्यता की नाना सीढ़ियों पर खड़ी और नाना ओर मुँह करके चलने वाली इन जातियों के लिए सामान्य धर्म खोज निकालना कोई सहज बात नहीं थी भारतवर्ष के ऋषियों ने अनेक प्रकार से अनेक ओर से इस समस्या को सुलझाने की कोशिश की थी। पर एक बात उन्होंने लक्ष्य की थी। समस्त वर्णों और समस्त जातियों का एक सामान्य आदर्श भी है। वह है अपने बन्धनों में अपने को बाँधना। मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न हैं। आहार निद्रा आदि पशु सुलभ स्वभाव उसके ठीक वैसे ही है, जैसे अन्य प्राणियों के लेकिन फिर भी वह पशु से भिन्न है। उसमें संयम है दूसरों के, सुख दुख के प्रति संवेदना है, श्रद्धा है, तप है। त्याग है। मनुष्य के स्वयं के उद्भावित बन्धन हैं।

अथवा

सिद्धान्तों की जितनी भारी गठरी लेकर हम अपने कर्म क्षेत्र के द्वार तक पहुँचते हैं, उतना भारी बोझ लेकर कदाचित ही किसी अन्य देश के व्यक्ति को पहुँचना पड़ता हो परन्तु किसी भी कार्यक्षेत्र में हमीं सबसे अधिक निष्क्रिय प्रमाणित होंगे। कारण, हम अपने सिद्धान्तों को उपयोग से बचा-बचा कर उसी प्रकार रखने में उददेश्य की सिद्धि समझ लेते हैं। जिस प्रकार धन को व्यय से बचाकर रखने वाले कृपण उसके संचय में ही अपने उद्योग की चरम सफलता देख लेते हैं। परिस्थिति, काल और स्थान के अनुसार उनके प्रयोग तथा रूपों के विषय में जानने का न हमें अवकाश है न इच्छा। फल यह हुआ कि हमारा जीवन अपूर्ण वस्तुओं में सबसे अधिक अपूर्ण होने का दुर्भाग्य मात्र प्राप्त कर सका।

5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबन्ध कला की विशेषताएं उद्घाटित कीजिए। (उत्तर सीमा 400 शब्द) [12]

अथवा

'जीने की कला' निबन्ध का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

6. निराला के काव्य की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
(उत्तर सीमा 100 शब्द) [3]

अथवा

भारतीय संस्कृति के किन उपादानों को देवत्व प्रदान किया गया ?

इकाई – III

7. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (उत्तर सीमा 200 शब्द) [7]

तमाल के पत्ते झर रहे हैं उसका सघन श्यामल वितान छिन्न-भिन्न होता जा रहा है। उसकी श्याममयता चिन्दी चिन्दी उड़ती जा रही है। वह उधरता जा रहा है, सूना आकाश उसे घेरता जा रहा है। उसका सारा अभिमान धीरे-धीरे टूटता जा रहा है कि मैंने सघन छांह दी, मैंने राधा-माधव की रस केलि को निभृत निकुंज की सुख-सुविधा दी, मैंने प्यार का रस पहचाना। वह मिट रहा है क्योंकि वह जानता है कि उसकी पहचान अधूरी थी और मिटो और पहचान के संस्पर्श बनकर नये सिरे से शिराओं में गर्म लहू बनकर दौड़ो, तुम्हारी 'गाँठ-गाँठ कोमल कली बन जाए, कंचन कली बन जाए, सुगन्ध बन जाए रस बन जाए, 'गीत गोविन्द' की गूंज बन जाए। इसीलिए वह बसंत में मिट लेता है और मैं यह मिटना सीख नहीं पाता कभी सीख पाऊँगा इसकी कोई सम्भावना नहीं देखता।

अथवा

नयी आधुनिकता का जन्म जिन मानवीय परिस्थितियों में हुआ है वे भी कम सत्य नहीं हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मार्क्सवाद के मुखोशनुमा मूल्यों का रहस्योद्घाटन महायुद्ध और भावी अणुयुद्ध का आतंक तथा मनुष्य की नितान्त लाचार स्थिति, राष्ट्रीय स्तर पर अर्द्धसत्यों के सृजन और प्रसारण में होड, बढ़ती हुई दीनता और भूख नौकरशाही के बढ़ते हुए और उनमें दिन-पर-दिन खोया जाता हुआ मनुष्य, अस्थिर राजनीतिक आदर्श तथा मूल्यगत सौदेबाजी संशय और आतंक का वातावरण–आदि मानवीय स्थितियां नितान्त सत्य हैं और इनके बीच जन्म लेने वाली नयी आधुनिकता के संस्कार नितान्त आरोपित और स्वांगपूर्ण नहीं। परन्तु जहाँ पुरानी आधुनिकता समूह सत्यों को

लेकर चलती है, नयी आधुनिकता समूह सत्यों से निरपेक्ष व्यक्ति-सत्यों पर ही आधारित है।

8. प्रेमचन्द और भाषा-समस्या' निबन्ध का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। (उत्तर सीमा 400 शब्द) [12]

अथवा

विद्यानिवास मिश्र की निबन्ध शैली की विवेचना कीजिए।

9. नयी आधुनिकता क्या है ? (उत्तर सीमा 100 शब्द) [3]

अथवा

साहित्य का प्रयोजन क्या है ?

इकाई – IV

10. हिन्दी भाषा के उद्‌भव एवं विकास पर एक लेख लिखिए।
(उत्तर सीमा 300 शब्द) [10]

अथवा

राजस्थानी भाषा का परिचय देते हुए उसकी प्रमुख बोलियों का विस्तृत विवेचन कीजिए।

11. निबन्ध के उद्‌भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए।
(उत्तर सीमा 300 शब्द) [7]

अथवा

आलोचना का संक्षिप्त परिचय देते हुए हिन्दी आलोचना के प्रकारों का वर्णन कीजिए।

12. आलोचना की विविध शैलियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए।
(उत्तर सीमा 100 शब्द) [3]

अथवा

'निबन्ध' की परिभाषा देते हुए उसका शाब्दिक अर्थ स्पष्ट कीजिए।

इकाई – V

13. निम्नलिखित में से किसी एक पर साहित्यिक निबन्ध लिखिए : [14]

(i) हिन्दी का आदिकाल
(ii) कबीर की प्रासंगिकता
(iii) राष्ट्रभाषा
(iv) हिन्दी का छायावाद
(v) मेरा प्रिय साहित्यकार

A-304

B.A. (Part-III) Examination, 2019

HINDI LITERATURE

First Paper

(आधुनिक काव्य)

Time allowed : Three hours

Maximum Marks : 100

श्री जैन (पी.जी.) कॉलेज, बीकानेर

इकाई – I

1. (अ) निम्नांकित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7

(उत्तर सीमा 200 शब्द)

इतिहास के हाथों
बाण बनने से अधिक अच्छा है
स्वयं हम
अँधेरों में यात्रा करते हुए
खो जाएँ
किसी के हाथों सही
पर नियति खोना है ।
मात्र
श्रेष्ठ हाथों की प्रतीती के लिए
इस मिथ्यात्व को
शास्त्र सम्मत सत्य कह कर
मत छलो ।
सब शिखर की नींव में
सोया अँधेरा है,

अथवा

यहाँ कुछ नहीं समाप्त हुआ
क्योंकि कभी
कुछ नहीं आरंभ हुआ
वह तो क्षण था
गुण था
जो कि है, रहेगा भी ।
केवल हम ही
उस क्षण के पूर्व तक उसमें नहीं थे
केवल हम ही
उस क्षण के बाद नहीं होते
इसीलिए हमें
कुछ जन्म लेता मरता लगता है ।
अजन्मे अविनश्वर क्षण या समय को नहीं ।

(ब) 'संशय की एक रात' के कथानक को स्पष्ट करते हुए इसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए। 10

(शब्द सीमा 350 शब्द)

अथवा

'संशय की एक रात' में आधुनिक जीवन की समस्याओं का जो निरूपण हुआ है। उसकी उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।

(स) "व्यक्ति का नितान्त वैयक्तिक व्यक्तित्व भी सार्वजनिक हो सकता है।" 'संशय की एक रात' के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 3

(शब्द सीमा 100 शब्द)

अथवा

"ऐकान्तिक आत्म-मन्थन और सामूहिक दायित्व बोध" की समस्या को 'संशय की एक रात' में किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है, स्पष्ट कीजिए।

इकाई – II

2. (अ) निम्नांकित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7

नयन उन्हें हैं निष्ठुर कहते,
पर इनसे जो आँसू बहते,
सदय हृदय वे कैसे सहते ?
गये तरस ही खाते !
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

(शब्द सीमा 200 शब्द)

अथवा

सफल आज उसका तप संयम,
पिला अहिंसा स्तन्य सुधोपम,
हरती जन मन भय, भव तम भ्रम,
जग जननी
जीवन विकासिनी !

(ब) 'ब्रज पर इन्द्र का कोप' कवितांश में हरिऔध ने कृष्ण को किस रूप में प्रस्तुत किया है, उदाहरण सहित समझाइए। 10

(उत्तर सीमा 350 शब्द)

अथवा

सिद्ध कीजिए कि महादेवी वर्मा के गीतों में उनके मन की पीड़ा व्यक्त हुई है ?

(स) "स्नेह निर्झर बह गया है" कविता का भाव अपने शब्दों में लिखिए। 3

(उत्तर सीमा 100 शब्द)

अथवा

'अशोक की चिन्ता' कविता में अशोक का क्या द्वन्द्व है ?

इकाई – III

3. (अ) निम्नांकित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7

(उत्तर सीमा 200 शब्द)

अवतरित हुआ संगीत
स्वयम्भू
जिसमें सोता है अखण्ड
ब्रह्म का मौन
अशेष प्रभामय ।
डूब गये सब एक साथ ।
सब अलग-अलग एकांकी पार तिरे ।

अथवा

चीख निकलना भी मुश्किल है,
असम्भव.....
हिलना भी ।
भयानक है बड़े-बड़े ढेरों की
पहाड़ियों-नीचे दबे रहना और
महसूस करते जाना
पसली की टूटी हुई हड्डी ।

(ब) 'बुद्ध और नाचघर' कविता का भाव स्पष्ट कीजिए । 10

(उत्तर सीमा 350 शब्द)

अथवा

मुक्तिबोध के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

(स) 'राष्ट्र-देवता का विसर्जन' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए । 3

(उत्तर सीमा 100 शब्द)

अथवा

नागार्जुन किनको प्रणाम करना चाहते हैं ?

इकाई – IV

4. (अ) निम्नांकित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7

(उत्तर सीमा 200 शब्द)

बार-बार ठीक उसी वक्त वह
व्यक्ति मर जाता है
जब जिसकी पीठ पर वक्त एक
गठरी रख जाता है
उसकी उछाह से हलकी होती हुई
चाल के बावजूद ।

अथवा

बाबूजी ! सच कहूँ–मेरी निगाह में
न कोई छोटा है
न कोई बड़ा है
मेरे लिए, हर आदमी एक जोड़ी जूता है
जो मेरे सामने
मरम्मत के लिए खड़ा है

(ब) नन्दकिशोर आचार्य की काव्यगत विशेषताओं को उदाहरण सहित समझाइए । **10**

(उत्तर सीमा **350** शब्द)

अथवा

"मोचीराम कविता सामाजिक जीवन की विसंगतियों पर तीखा प्रहार है ।" उदाहरण सहित समझाइए ।

(स) 'खुरदरी हथेलियाँ' में निहित भाव का क्या तात्पर्य है ? **3**

(उत्तर सीमा **100** शब्द)

अथवा

'शोकसभा' कविता का व्यंग्य स्पष्ट कीजिए ।

इकाई – V

5. (अ) छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए । **7**

(उत्तर सीमा **300** शब्द)

अथवा

प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ समझाइए ।

(ब) रस का अर्थ स्पष्ट करते हुए रस के स्वरूप पर प्रकाश डालिए । **7**

(उत्तर सीमा **300** शब्द)

अथवा

काव्य के विविध रूपों का वर्णन कीजिए ।

(स) निम्नांकित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(उत्तर सीमा **75** शब्द) **2 × 3 = 6**

(i) तारसप्तक के कवि

(ii) शृंगार रस

(iii) आलम्बन विभाव

(iv) बिम्ब

A-307

B.A. (Part-III) Examination, 2019

HINDI LITERATURE

Second Paper

(निबन्ध एवं भाषा)

श्री जैन (पी.जी.) कॉलेज, बीकानेर

Time allowed : Three hours
Maximum Marks : 100

इकाई – I

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **1 × 7 = 7**

(उत्तर सीमा 200 शब्द)

सुमन के दिव्य सौन्दर्य के लिए उसका परागमय स्थूल शरीर ही नहीं, वरन् कँटीली डालें और मिट्टी के ढेले भी आवश्यक हैं। किन्तु हम मिट्टी के ढेले पर ही सन्तोष नहीं कर सकते। सुमन का सौरभ मिट्टी के ढेले की पूर्णता है। वहीं पृथ्वी का गन्धवती होना प्रमाणित करता है। किन्तु हमको यह भी मानना होगा कि फूल के साथ हाँडी जिसमें दाल पकती है और घड़ा जिसमें पानी ठण्डा होता है, मिट्टी की पूर्णताओं में से हैं। इसके साथ हम यह भी नहीं भूल सकते कि सारी मिट्टी घड़े और कुल्हड़ बनाने में ही खर्च नहीं हो जाती, उसके खिलौने भी बनते हैं और उससे सुमन-सौरभ भी उत्पन्न होता है।

अथवा

प्रेम की भाषा शब्द रहित है। नेत्रों की, कपोलों की, मस्तक की भाषा भी शब्द रहित है। जीवन का तत्व भी शब्द से परे है। सच्चा आचरण-प्रभाव, शीत, अचल-स्थिति-संयुक्त आचरण न तो साहित्य के लम्बे व्याख्यानों से गढ़ा जा सकता है, न वेद की श्रुतियों के मीठे उपदेश से, न अंजील से, न कुरान से, न धर्म चर्चा से, न केवल सत्संग से। जीवन के अरण्य में घुसे हुए पुरुष के हृदय पर प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन व्याख्यानों के यत्न से सुनार के छोटे हथौड़े की मन्द-मन्द चोटों की तरह आचरण का रूप प्रत्यक्ष होता है।

2. 'मन की दृढ़ता' शीर्षक निबन्ध में व्यक्त विचारों को स्पष्ट करते हुए बालकृष्ण भट्ट के निबन्धों में प्रयुक्त भाषा-शैली की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। **1 × 12 = 12**

(उत्तर सीमा 400 शब्द)

अथवा

बाबू गुलाब राय के 'साहित्य का मूल्य' निबन्ध में वर्णित मूल्यों पर प्रकाश डालिए।

$1 \times 3 = 3$

3. 'आचरण की सभ्यता' नामक निबन्ध के मूल सन्देश को स्पष्ट कीजिए ।

(उत्तर सीमा **100** शब्द)

अथवा

'उत्साह' निबंध के आधार पर कर्मभावना से उत्पन्न आनन्द के रूपों पर प्रकाश डालिए ।

इकाई – II

$1 \times 7 = 7$

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(उत्तर सीमा **200** शब्द)

सफलता और चरितार्थता में अन्तर है । मनुष्य मरणास्त्रों के संचय से, बाह्य उपकरणों के बाहुल्य से उस वस्तु को पा सकता है, जिसे उसने बड़े आडम्बर के साथ सफलता नाम दे रखा है । परन्तु मनुष्य की चरितार्थता प्रेम में है, मैत्री में है, त्याग में है, अपने को सबके मंगल के लिए निःशेष भाव से देने में है । नाखून का बढ़ना मनुष्य की उस अन्ध-सहजात वृत्ति का परिणाम है, जो उसके जीवन में सफलता ले आना चाहती है, उसको काट देना उस स्व-निर्धारित आत्म-बन्धन का फल है, जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाता है ।

अथवा

हमारे संस्कारों में जीवन के लिए आवश्यक सिद्धान्त ऐसे सूत्र रूप में समा जाते हैं जो प्रयोग रूपी टीका के बिना न नष्ट हो पाते हैं और न उपयोगी । 'सत्यं ब्रूयात्' को हम सिद्धान्त रूप में जानकर भी न अपना विकास कर सकते हैं और न समाज का उपकार; जब तक अनेक परिस्थितियों, विभिन्न स्थानों और विशेष कालों में उसका प्रयोग कर उसके वास्तविक अर्थ को न समझ लें – उसके यथार्थ रूप को हृदयंगम न कर लें ।

5. प्रसाद और निराला शीर्षक निबंध में 'आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने प्रसाद और निराला के रचनागत साम्य और वैषम्य को तुलनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया है ।' इस कथन की विवेचना कीजिए । $1 \times 12 = 12$

(उत्तर सीमा **400** शब्द)

अथवा

'भूमि को देवत्व प्रदान' निबंध की मूल चेतना को स्पष्ट करते हुए डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल की निबंध शैली पर प्रकाश डालिए ।

6. हजारीप्रसाद द्विवेदी की निबंध कला की विशेषताओं का वर्णन कीजिए । $1 \times 3 = 3$

(उत्तर सीमा **100** शब्द)

अथवा

'जीने की कला' निबंध के आधार पर भारतीय नारी की स्थिति का उल्लेख कीजिए ।

7. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : $1 \times 7 = 7$

(उत्तर सीमा 200 शब्द)

क्या आधुनिकता की कोई परिभाषा हो सकती है ? अपने विशेष या रूढ़ अर्थ में जिसे मैंने 'नयी आधुनिकता' कहा है, यह उतनी उलझी प्रक्रिया है कि इसकी परिभाषा नहीं दी जा सकती – बल्कि इसके संस्कारों के माध्यम से जिनका जिक्र प्रारम्भ से किया गया है, इसे पहचाना जा सकता है । 'रूमान' और 'क्लासिसिज्म' की तरह इसकी भी बिलकुल सटीक परिभाषा देना कठिन है । नयी आधुनिकता का दर्शन ही है – "शब्दों के द्वारा नहीं अस्तित्वगत अनुभूति के द्वारा पहचानने और उपलब्ध कराने का प्रयत्न ।" अत: स्वत: इसको भी शब्दों के माध्यम से नहीं इसके अस्तित्व को पहचानकर इसे उपलब्ध करना चाहिए ।

अथवा

स्वतन्त्रता का ही एक आयाम समता है, क्योंकि उसके बिना व्यावहारिक अर्थों में स्वतन्त्रता अपूर्ण रहती है । समकालीन साहित्य में स्त्री–पुरुष असमानता, दलित वर्ग के दमन–शोषण और सामन्तवादी–पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा आर्थिक–सामाजिक शोषण और अन्याय के चित्र बिखरे पड़े हैं । यथार्थवाद के बढ़ते आग्रह के कारण आदर्श चरित्रों की सृष्टि से भावात्मक विश्वसनीयता पैदा नहीं हो पाती और वे चरित्र और स्थितियाँ कृत्रिम लगने के कारण प्रभावहीन हो जाती हैं – कहना चाहिए कि ठीक तरह से रस–निष्पति नहीं कर पातीं । इसी कारण आदर्श चित्रण का रास्ता छोड़कर साहित्यकार को यथार्थ के दबाव को स्वीकार करना पड़ा ।

8. 'तमाल के झरोखे से' निबंध में व्यक्त विद्यानिवास मिश्र के विचार स्पष्ट कीजिए । $1 \times 12 = 12$

(उत्तर सीमा 400 शब्द)

अथवा

'परम्परा बोध और समकालीन साहित्य' शीर्षक निबन्ध का सारांश प्रस्तुत करते हुए नन्दकिशोर आचार्य की निबंध–शैली को भी रेखांकित कीजिए ।

9. भारतीय परम्परा में साहित्य की क्या हैसियत है ? $1 \times 3 = 3$

(उत्तर सीमा 100 शब्द)

अथवा

उर्दू के विषय में प्रेमचन्द के विचारों को स्पष्ट कीजिए ।

इकाई – IV

10. भाषा की परिभाषा लिखते हुए उसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए। $1 \times 10 = 10$

(उत्तर सीमा **300** शब्द)

अथवा

देवनागरी लिपि के गुण–दोष पर प्रकाश डालते हुए देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को स्पष्ट कीजिए।

11. ललित निबन्ध की विकास यात्रा का परिचय देते हुए हजारीप्रसाद द्विवेदी के योगदान पर प्रकाश डालिए। $1 \times 7 = 7$

(उत्तर सीमा **300** शब्द)

अथवा

हिन्दी आलोचना का अर्थ बताते हुए आलोचना के प्रमुख प्रकारों का वर्णन कीजिए।

12. राजस्थानी भाषा पर परिचयात्मक टिप्पणी लिखिए। $1 \times 3 = 3$

(उत्तर सीमा **100** शब्द)

अथवा

निबन्ध के प्रकारों का परिचय दीजिए।

इकाई – V

13. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर साहित्यिक निबंध लिखिए : $1 \times 14 = 14$

(शब्द सीमा **500** शब्द)

(i) भक्तिकाल : हिन्दी का स्वर्णयुग

(ii) हिन्दी साहित्य में प्रकृति चित्रण

(iii) उपन्यासकार प्रेमचन्द

(iv) साहित्य और समाज

(v) हिन्दी की नई कविता

Roll No : .....

Total No. of Questions : 12] [Total No. of Printed Pages : 4

श्री जैन (पी.जी.) कॉलेज, बीकानेर

A–345

B.A. (Part-III) Examination, 2021

HINDI LITERATURE

Paper - I

(आधुनिक काव्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : 100*

Section–A **(Marks : 2 × 10 = 20)**

Note :– Answer all *ten* questions (Answer limit **50** words). Each question carries **2** marks.

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

Section–B **(Marks : 8 × 5 = 40)**

Note :– Answer any *five* questions out of seven (Answer limit **200** words). Each question carries **8** marks.

(खण्ड–ब) **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

Section–C **(Marks : 20 × 2 = 40)**

Note :– Answer any *two* questions out of four (Answer limit **500** words). Each question carries **20** marks.

(खण्ड–स) **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

प्रत्येक 2

खण्ड–अ

1. सभी दस प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) 'शम्बूक' खण्डकाव्य में कवि ने लोकनायक की क्या विशेषताएँ बतायी हैं ?

(ii) कवि जगदीश गुप्त का मनुष्य एवं मानवता के प्रति क्या दृष्टिकोण है ?

(iii) 'ले चल मुझे भुलावा देकर' गीत का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

(iv) 'संध्या सुंदरी' कविता में प्रयुक्त प्रमुख अलंकार कौनसा है ? सोदाहरण समझाइए।

(v) 'अग्निपथ' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश प्रेषित करना चाहता है ?

(vi) 'बबूल' कविता की प्रतीक योजना पर प्रकाश डालिए।

(vii) 'हँसो हँसो जल्दी हँसो' कविता में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

(viii) दुष्यन्त कुमार की गजलों की विशेषताएँ लिखिए।

(ix) मार्क्सवादी साहित्य की **चार** विशेषताएँ बताइए।

(x) स्त्री विमर्श क्या है ? संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

प्रत्येक 8

खण्ड–ब

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

2. सभी पृथ्वी-पुत्र हैं तब जन्म से
क्यों भेद माना जाय
जन्मजात समानता के तथ्य पर
क्यों खेद माना जाय
'जन्मना जायते शुद्ध'
क्या नहीं सबके लिए यह सत्य
और 'संस्कारात ही द्विज उच्यते'
की घोषणा का क्यों न हो सातत्य।

3. विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहाग-भरी-स्नेह-स्वप्न-मग्न-
अमल-कोमल-तनु तरुणी-जूही की कली,
दृग बन्द किए, शिथिल,- पत्राङ्क में,
वासन्ती निशा थी;
विहर-विधुर-प्रिया-संग छोड़
किसी दूर देश में था पवन
जिसे कहते हैं मलयानिल।

4. तुम मुझ में प्रिय! फिर परिचय क्या!
तारक में छवि प्राणों में स्मृति,
पलकों में नीरव पद की गति,
लघु उर में पुलकों की संसृति,
भर लाई हूँ तेरी चंचल
और करूँ जग में संचय क्या!
तेरा मुख सहाय अरुणोदय,
परछाई रजनी विषादमय
यह जागृति वह नींद स्वप्नमय,
खेल-खेल थक थक सोने दो
मैं समझूँगी सृष्टि प्रलय क्या!

5. "श्रेय नहीं कुछ मेरा :
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में-
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने
सब कुछ को सौप दिया था–
सुना आपने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था :
वह तो सब कुछ की तथता थी–
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।"

6. एक गाँव है, वहाँ नदी है,
नदी कूल से दूर दिशा तक खेत बिछे हैं
हरे-भरे वे श्यामल श्यामल
जिनमें छिपी, छिपी फिरती है लाल ओढ़नी,
मुँह की श्यामल चमक सुरीली
साथ-साथ मेहनत के पुतले
शोषण-हत गूम खाने वाले
दु:ख के स्वामी

अविश्रान्त वे काले-काले हाथ व्यस्त हैं
रिक्त पेट की आँखों में दु:ख के प्रवाह ले
जिनकी बेबस कर्मशीलता ने युग-युग के
गौर कपोलों में लाली की मदिरा भर दी।
आह! त्याग की उत्कट प्रतिमा होरी महतो, भोली धनिया
जाग रहे हैं,
काम कर रहे हैं अब भी खेतों में

7. गरीबी
एक खुली हुई किताब
जो हर समझदार
और मूर्ख के हाथों में दे दी गई है।
कुछ उसे पढ़ते हैं
कुछ उसके चित्र देख
उलट-पुलट रख देते
नीचे शो केश के।

8. वो आदमी नहीं है मुकम्मल बयान है,
माथे पर उसके चोट का गहरा निशान है।
वे कर रहे हैं इश्क पे संजीदा गुफ़्तगू,
मैं क्या बताऊँ मेरा कहीं और ध्यान है।
सामान कुछ नहीं है फटेहाल है मगर,
झोले में उसके पास कोई संविधान है।
उस सिरफिरे को यों नहीं बहला सकेंगे आप,
वो आदमी नया है मगर सावधान है।

खण्ड–स प्रत्येक 20

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

9. 'शम्बूक' खण्डकाव्य के आधार पर कवि श्री जगदीश गुप्त की समसामयिक चेतना को समझाइए।
10. नागार्जुन मार्क्सवादी विचारधारा के कवि हैं। स्पष्ट कीजिए।
11. सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' के काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
12. 'हिन्दी साहित्य और दलित विमर्श' विषय पर लेख लिखिए।

Roll No : .....

Total No. of Questions : 12] [Total No. of Printed Pages : 4

A–346

B.A. (Part-III) Examination, 2021

HINDI LITERATURE

Paper - II

श्री जैन (पी.जी.) कॉलेज, बीकानेर

(निबन्ध एवं भाषा)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : 100*

Section–A **(Marks : 2 × 10 = 20)**

Note :– Answer all *ten* questions (Answer limit **50** words). Each question carries **2** marks.

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

Section–B **(Marks : 8 × 5 = 40)**

Note :– Answer any *five* questions out of seven. (Answer limit **200** words). Each question carries **8** marks.

(खण्ड–ब) **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

Section–C **(Marks : 20 × 2 = 40)**

Note :– Answer any *two* questions out of four (Answer limit **500** words). Each question carries **20** marks.

(खण्ड–स) **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

प्रत्येक 2

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर सीमा 50 शब्द)।

(i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल गद्य की किन दो विधाओं में प्रसिद्ध हैं ? इस संदर्भ में इनकी **दो** रचना के नाम भी लिखिए।

(ii) निबन्ध में समास शैली की क्या विशेषता है ?

(iii) हिन्दी के **चार** ललित निबन्धकारों का नाम बताइए।

(iv) विचारात्मक निबन्ध और वर्णनात्मक निबन्ध में अन्तर बताइए।

(v) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को सिद्ध करने वाली विशेषताएँ बताइए।

(vi) प्रतापनारायण मिश्र के निबन्ध 'दाँत' का मूल संदेश बताइए।

(vii) साहित्य में 'आलोचना' से क्या अभिप्राय है ? स्पष्ट कीजिए।

(viii) विषय तथा शैली के आधार पर निबन्धों का वर्गीकरण कीजिए।

(ix) 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबन्ध में 'मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है' को स्पष्ट कीजिए।

(x) 'तमाल के झरोखे से' निबन्ध से विद्यानिवास मिश्र क्या संदेश देता है ?

खण्ड–ब

प्रत्येक 8

अग्रांकित सात में किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर सीमा 200 शब्द।

2. यह एक साधारण नियम है कि जब कभी दो चित्त आपस में चक्कर खायेंगे तो एक-दूसरे पर कुछ-न-कुछ असर होगा ही । इसी असर को भली या बुरी सोहबत का असर कहते हैं। सोहबत का असर जरूर होता है। इसको रोकने की सामर्थ्य किसी को नहीं है। यह असम्भव है कि एक चित्त अपना असर दूसरे पर पैदा न करे या वह दूसरा भी उस असर को अपने ऊपर न आने दे; यह एक ऐसी अनदेखी बात है जिसका रोकना या उसे कुछ अदल-बदल कर ग्रहण करना दोनों का सामर्थ्य के बाहर है। जब यह बात है तो दृढ़ मन वाले, अपनी ऊँची समझ और ऊँचे खयालात से, कमजोर और दुर्बल चित्त वालों को ऐसा बेकाबू कर डालेंगे, जैसे बड़े से बड़े नशा का असर किसी को बेकाबू कर देता है। इसलिए दुर्बल चित्त वाले का दृढ़ मन वाले के साथ सम्पर्क कभी उपकारी नहीं है।

3. वैर क्रोध का आचार या मुरब्बा है। जिससे हमें दु:ख पहुँचा है उस यदि हमने क्रोध किया और यह क्रोध हमारे हृदय में बहुत दिनों तक टिका रहा तो वह वैर कहलाता है। इस स्थायी रूप में टिक जाने के कारण क्रोध का वेग और उग्रता तो धीमी पड़ जाती है, पर लक्ष्य को पीड़ित करने की प्रेरणा बराबर बहुत काल तक हुआ करती है। क्रोध अपना बचाव करते हुए शत्रु को पीड़ित करने की युक्ति आदि सोचने का समय प्राय: नहीं देता, पर वैर उसके लिए बहुत समय देता है।

4. एक निर्दोष का प्राण बचाने वाला असत्य उसकी हिंसा का कारण बनने वाले सत्य से श्रेष्ठ ही रहेगा, एक क्रूर स्वामी की अन्यायपूर्ण आज्ञा को पालन करने वाले सेवक से उसका विरोध करने वाला अधिक स्वामिभक्त कहलायेगा और एक दुर्बल पर अन्याय करने वाले अत्याचारी को क्षमा कर देने वाले क्रोध जित् से उसे दण्ड देने वाला क्रोधी संसार का अधिक उपकार कर सकेगा। अन्य सिद्धान्तों के लिए भी यही सत्य है और रहेगा।

5. राष्ट्र भाषा के राजनीतिक महत्त्व को वह पूरी तरह स्वीकार करते थे और इसके लिए उन्होंने नेताओं पर यह दोष भी लगाया है कि वे इस सम्बन्ध में अधिक सचेष्ट नहीं रहे।" जब हमारे नेता हिन्दी साहित्य से बेखबर से हैं, जब हम लोग थोड़ी-सी अंग्रेजी लिखने की सामर्थ्य होते ही हिन्दी को तुच्छ और ग्रामीणों की भाषा समझने लगते हैं, तब यह कैसे आशा की जा सकती है कि हिन्दी में ऊँचे दर्जे के साहित्य का निर्माण हो।

6. मेरी समझ से आधुनिकता निज में कोई मूल्य या तथ्य नहीं बल्कि एक स्वभाव है, एक संस्कार-प्रवाह है, एक बोध-प्रक्रिया है। चाहे जो इसे मानें पर गुण-धर्म के हिसाब से 'स्वभाव' बोध-प्रक्रिया, संस्कार-प्रवाह आदि एक ही बातें हैं। इसे तथ्य या मूल्य मानने का भ्रम तभी होता है जब लोग संस्कार को ही मूल्य मान बैठते हैं, यथा प्रश्नाकुलता, आस्वादन में विश्वास या यायावरवृत्ति आदि जो संस्कार हैं या स्वभाव के अंग हैं, चिन्तन की असावधान अवस्था में मूल्य मानकर लोग आधुनिकता की मूल्य के तौर पर चर्चा करने लगते हैं। पर यदि उनसे बात आगे बढ़ाई जाय तो घुमा-फिराकर यही जबाब मिलेगा 'मूल्यहीनता ही आधुनिकता का मूल्य है।' पर यही भी कोई बात हुई! अत: शाब्दिक द्रविड़ प्राणायाम को छोड़कर हमें मान लेना चाहिए कि आधुनिकता मूल्य या तथ्य नहीं, स्वभाव या संस्कार-प्रवाह है। हाँ इतना माना जा सकता है कि इसके जनक कुछ मूल्य हों या इसके द्वारा या इसके माध्यम से कुछ मूल्यों का जन्म हो, जैसे उन्नीसवीं शती की 'पुरानी आधुनिकता' के विषय में; परन्तु स्वत: यह संस्कार-प्रवाह है, मूल्य नहीं।

7. लेकिन जिसे लौकिक साहित्य माना जाता है, उसमें भी नैतिक अनुभूति ही जीवन को पवित्र और सार्थक करती है। कह सकते हैं कि वहाँ आत्मानुभूति और मुल्यानुभूति का एकत्व प्रदर्शित है। महाभारत और रामायण, दोनों की मूल्यानुसन्धान की नैतिक साधना के सम्प्रेषण के माध्यम से आत्मानुभूति की रसदशा तक ले जाती है। लौकिक कवियों में सर्वोत्कृष्ट माने जाने वाले कालिदास में जीवन का भरपूर उपभोग तो है, पर जैसा श्री अरविन्द कहते हैं, वह तप द्वारा पवित्र किया गया है। जीवन का यह पवित्रीकरण, कर्म और नैतिकता का यह समन्वय ही भारतीय साहित्य में प्रसूत-बोध है जो सामाजिक जीवन में कर्मयोग की परम्परा—डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डे के शब्दों में, भारतीय सामाजिक जीवन की वास्तविक थाती-के रूप में दिखायी देता है।

8. प्रसाद की काव्य-भाषा समरूप और समरस है। उनमें निराला की भाँति प्रयोगों का बाहुल्य नहीं। जहाँ कहीं प्रसाद को उदात्त भावना की व्यंजना करनी पड़ी है, वहाँ उन्होंने भाषा के बदले छन्द-योजना की सहायता ली है और वीर रस के वर्णन में तो वे प्राय: नि:सहाय हो गये हैं। 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण' जैसी कविता में वीर भाव की अपेक्षा विगर्हणा की मनोभावना प्रमुख रूप से निर्मित हुई है। हास्य, रौद्र और भयानक रसों की अपेक्षा प्रसाद की काव्य-भाषा वियोग, शृंगार और करुण रस के अधिक उपयुक्त बन सकी है। प्रसाद की भाषा में लाक्षणिक प्रयोगों के बाहुल्य की चर्चा हम ऊपर कर चुके हैं। वक्रोक्तिबहुल लाक्षणिक पदावली की योजना से प्रसाद की भाषा एक अभिनव भंगिमा से समन्वित होती है।

खण्ड–स

प्रत्येक 20

चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

9. निबन्ध की परिभाषा देते हुए उसके स्परूप और तत्त्वों का विवेचन कीजिए।

10. कुबेरनाथ राय के 'आधुनिकता : नयी और पुरानी' ललित निबन्ध की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

11. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का प्रकाशन करते हुए उनके निबन्ध-सम्बन्धी दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

12. 'संत कबीर का समाज सुधारक रूप' विषय पर एक आलोचनात्मक निबन्ध लिखिए।

Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

श्री जैन (पी.जी.) कॉलेज, बीकानेर

A–342

B.A. (Part-III) Examination, 2022

HINDI LITERATURE

Paper - I

(आधुनिक काव्य)

Time : 3 Hours] [*Maximum Marks : 100*

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) 'शम्बूक' काव्य में चित्रित मुख्य समस्या को स्पष्ट कीजिए।

(ii) जगदीश गुप्त द्वारा रचित 'शम्बूक' लघु काव्य में कुल कितने अंश हैं ? नामोल्लेख कीजिए।

(iii) गुप्त जी की कविता 'निर्बल का बल' का मूल भाव लिखिए।

(iv) महादेवी वर्मा की कविता 'तुम मुझमें प्रिय फिर क्या परिचय' में निहित संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

(v) रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं का मूल स्वर राष्ट्रीयता है। स्पष्ट कीजिए।

(vi) अज्ञेय द्वारा प्रयोगवाद का प्रवर्तन किया गया। इसके पीछे क्या कारण रहे थे ?

(vii) धूमिल की कविता 'बीस साल बाद' में व्यक्त मोहभंग की स्थिति को स्पष्ट कीजिए।

(viii) हरिश भादानी की कविता 'उड़ ना मन मत हार सुपर्णे' के पीछे उद्देश्य क्या है ?

(ix) काव्य बिम्ब से क्या अभिप्राय है ?

(x) विकलांग विमर्श क्या है ? संक्षिप्त परिचय लिखिए।

खण्ड-ब

नोट :- निम्नलिखित अवतरणों की सात में से किन्हीं **पाँच** पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

2. शूद्र हूँ मैं
मानव समाज में
मेरा अस्तित्व बहुत अल्प है
फिर भी
जाने क्यों मेरे मन में
युग-युग से परिभाषित
व्यक्ति के चरित्र को
मानव भविष्य को
नये सन्दर्भों में
जानने समझने का
उपजा संकल्प है।

3. न जाने कौन, अये द्युतिमान !
जान मुझको अबोध, अज्ञान,
सुझाते हो तुम पथ अनजान,
फूकँ देते छिद्रों में गान,
अहे सुख-दुख के सहचर मौन।
नहीं कह सकता तुम हो कौन!

4. निर्बल का बल राम है।

हृदय! भय का क्या काम है॥

राम वही कि पतित-पावन जो

परम दया का धाम है।

इस भव सागर से उद्धारक

तारक जिसका नाम है।

हृदय, भय का क्या काम है॥

तन-बल, मन-बल और किसी को

धन-बल से विश्राम है,

हमें जानकी-जीवन का बल

निशिदिन आठों याम है।

हृदय भय का क्या काम है॥

5. कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास

कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त

कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

दाने आए घर के अन्दर कई दिनों के बाद

धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद

चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद

कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।

6. हरि ने भीषण हुंकार किया,

अपना स्वरूप-विस्तार किया,

डगमग-डगमग दिग्गज डोले,

भगवान् कुपित होकर बोले–

"जंजीर बढ़ाकर साध मुझे

हाँ-हाँ, दुर्योधन! बाँध मुझे।

यह देख, गगन मुझमें लय है

यह देख, पवन मुझमें लय है,

मुझमें विलीन झँकार सकल,

मुझमें लय है संसार सकल''

7. हमारी हिन्दी एक दुहाजू की नयी बीबी है

बहुत बोलने वाली बहुत खाने वाली बहुत सोने वाली

गहने गढ़ाते जाओ

सर पर चढ़ाते जाओ

वह मुटाती जाए

पसीने से गन्धाती जाए, घर का माल मैके पहुँचाती जाए

पड़ोसिनों से जले

कचरा फेंकने को लेकर लड़े।

8. नहीं मालूम

हो या नहीं

रच देती है तुम्हें लेकिन

प्रार्थना मेरी

स्रष्टा करती हुई मुझे

मैं भी प्रार्थना हूँ क्या तुम्हारी

ओ मेरे स्रष्टा

किसे निवेदित पर!

खण्ड–स

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

9. शम्बूक खण्डकाव्य में समसामयिक चिन्तन बोध की अभिव्यक्ति हुई है। स्पष्ट कीजिए।

10. जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रमुख स्तम्भ हैं। स्पष्ट कीजिए।

11. अज्ञेय के काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों को समझाकर लिखिए।

12. शृंगार रस तथा हास्य रस की उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।

Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

श्री जैन (पी.जी.) कॉलेज, बीकानेर

A–352

B.A. (Part–III) Examination, 2022

HINDI LITERATURE

Paper - II

(निबन्ध एवं भाषा)

Time : 3 Hours] [*Maximum Marks : 100*

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द) :

   (i) ललित निबन्ध किसे कहते हैं ?

   (ii) देवनागरी लिपि की कोई **चार** विशेषताएँ लिखिए।

(iii) भारतीय आर्य भाषाओं का अभिप्राय समझाइए।

(iv) विद्यानिवास मिश्र के निबंध कला की विशिष्टता पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

(v) आलोचना और निबन्ध में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(vi) बाबू गुलाब राय के अनुसार साहित्य का मूल्य क्या है ?

(vii) 'दाँत' निबन्ध का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

(viii) नन्दकिशोर आचार्य के निबन्ध 'परम्परा बोध और समकालीन साहित्य' में निहित विचार को स्पष्ट कीजिए।

(ix) 'साहित्य का मूल्य' नामक निबन्ध की विषय-वस्तु क्या है ?

(x) महादेवी वर्मा के अनुसार 'जीने की कला' को संक्षेप में समझाइए।

खण्ड–ब

नोट :– निम्नलिखित सात में से किन्हीं **पाँच** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

2. तत किम्! मैं हैरान होकर सोचता हूँ कि मनुष्य आज अपने बच्चों को नाखून न काटने के लिए डाँटता है। किसी दिन-कुछ थोड़े लाख वर्ष-वह अपने बच्चों को नाखून नष्ट करने पर डाँटता रहा होगा। लेकिन प्रकृति है कि वह अब भी नाखून को जिलाए जा रही है और मनुष्य है कि वह अब भी उसे काटे जा रहा है। वे कंबख्त रोज बढ़ते हैं, क्योंकि वे अंधे हैं, नहीं जानते कि मनुष्य को इससे कोटि-कोटि गुना शक्तिशाली अस्त्र मिल चुका है। मुझे ऐसा लगता है कि मनुष्य अब नाखून को नहीं चाहता। उसके भीतर बर्बर-युग का कोई अवशेष रह जाए, यह उसे असह्य है।

3. मन:प्रसाद अर्थात् मन की स्वच्छता, सौम्यता या सौमनस्य जो बहुधा तभी होगा जब बाहरी विषयों की चिंता में मन व्यग्र और व्याकुल न हो। बाहर से विनीत और सौम्य बनना कुछ और ही बात है मन का सौम्य कुछ और ही है। जिसकी बड़ी पहचान एक यह भी है कि किसी का अनिष्ट न चाहेगा वरन् सबों के हित की इच्छा रखेगा। तीसरा गुण मन का श्रीकृष्ण भगवान ने मौन कहा है। मौन अर्थात् मुनि भाव। एकाग्रतापूर्वक अपने को सोचना कि हम कौन हैं, जिसका दूसरा नाम निदिध्यासन भी है। वाक्-संयम न बोलना या कम बोलना भी मन के संयम का हेतु है।

4. प्रसाद की काव्य-भाषा समरूप और समरस है। उनमें निराला की भाँति प्रयोगों का बाहुल्य नहीं। जहाँ कहीं प्रसाद को उदात्त भावना की व्यंजना करनी पड़ी है, वहाँ उन्होंने भाषा के बदले छन्द-योजना की सहायता ली है और वीर रस के वर्णन में तो वे प्राय: नि:सहाय हो गए हैं। 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण' जैसी कविता में वीर भाव की अपेक्षा विगर्हणा की मनोभावना प्रमुख रूप से निर्मित हुई है। हास्य, रौद्र और भयानक रसों की अपेक्षा प्रसाद की काव्य-भाषा वियोग, शृंगार और करुण रस के अधिक उपयुक्त बन सकी है। प्रसाद की भाषा में लाक्षणिक प्रयोगों के बाहुल्य की चर्चा हम ऊपर कर चुके हैं। वक्रोक्ति बहुल लाक्षणिक पदावली की योजना से प्रसाद की भाषा एक अभिनव भंगिमा से समन्वित होती है।

5. दांत दंतावली में बने हैं तभी तक उनका महत्व है। उसके बाहर के घृणित और फेंके जाने योग्य हैं। ठीक वही स्थिति मनुष्य की भी है इसलिए अपनी जाति और देश में ही रहे। जिस प्रकार दाँत में दर्द होने पर उसे निकलवा दिया जाता है, वैसे ही स्वार्थी और जाति का अहित करने वालों से भी कोई सम्बन्ध नहीं है।

6. साधारणतया हम उसी वस्तु को मूल्यवान कहते हैं जो या तो सीधे तौर से हमारे उपयोग में आ सके या हमारे लिए उपयोगी वस्तुओं को जुटा सके या भविष्य में जुटा सकने की सामर्थ्य रखे। हम उपयोगी उसी वस्तु को कहते हैं जो हमारी किसी आवश्यकता की पूर्ति कर सके। कूड़ा-कर्कट जब हमारी किसी आवश्यकता की पूर्ति नहीं करता तो अनुपयोगी समझा जाकर फेंक दिया जाता है किन्तु वही जब खाद बनकर हमारे उद्यान के फूलों या गोभी-टमाटर के उत्पादन तथा उनकी उपज और आकार वृद्धि में सहायक होता है तब हमारी एक आवश्यकता की पूर्ति के कारण उपयोगी और मूल्यवान बन जाता है।

7. सामाजिक जीवन में क्रोध की जरूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों का चिर, निवृत्ति का उपाय ही न कर सके। कोई मनुष्य किसी दुष्ट के नित्य दो-चार प्रहार सहता है। यदि उसमें क्रोध का विकास नहीं हुआ है तो वह केवल आह-ऊह करेगा जिसका उस दुष्ट पर कोई प्रभाव नहीं। उस दुष्ट के हृदय में विवेक, दया इत्यादि उत्पन्न करने में बहुत समय लगेगा।

8. पर यदि उनसे बात आगे बढ़ाई जाए तो घुमा-फिराकर यही जवाब मिलेगा—'मूल्यहीनता ही आधुनिकता का मूल्य है।' पर यह भी कोई बात हुई। अतः शाब्दिक द्रविड़ प्राणायाम को छोड़कर हमें मान लेना चाहिए कि आधुनिकता मूल्य या तथ्य नहीं, स्वभाव या संस्कार-प्रवाह है। हाँ, इतना माना जा सकता है कि इसके जनक कुछ मूल्य हो या इसके द्वारा या इसके माध्यम से कुछ मूल्यों का जन्म हो, जैसे उन्नीसवीं शती की 'पुरानी आधुनिकता' के विषय में परन्तु स्वतः यह संस्कार-प्रवाह है, मूल्य नहीं।

खण्ड–स

नोट :– निम्नलिखित चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

9. 'राजस्थान का हिन्दी साहित्य' विषय पर एक लेख लिखिए।

10. निबन्धकार के रूप में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के साहित्यिक योगदान का वर्णन कीजिए।

11. विद्यानिवास मिश्र कृत 'तमाल के झरोखे से' निबन्ध की संवेदना और शिल्प का विवेचन कीजिए।

12. ''बिना मूल्य व्यवस्था और संस्कार के आधुनिकता की कल्पना नहीं की जा सकती।'' इस कथन की समीक्षा 'आधुनिकता नयी और पुरानी' निबन्ध के आधार पर कीजिए।